

अंक : 19

जनवरी, 2026

शिव-शक्ति

WWW.VITHIKA.ORG

सा हित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान

वीथिका ई पत्रिका

DOI: [10.528/Zenodo.11063568](https://doi.org/10.528/Zenodo.11063568)

वीथिका ई पत्रिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय

चित्रा मोहन

सुमित उपाध्याय

प्रधान संपादक

मुख्य सलाहकार संपादक

प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

संपादकीय समिति

संरक्षक समिति

डॉ. अरुण कुमार सिंह

डॉ. बिपिन कुमार मिश्र

डॉ. धनञ्जय शर्मा

श्री मनोज कुमार सिंह

एड. सत्यप्रकाश सिंह

श्री बृजेश गिरि

श्री नन्दलाल शर्मा

वरिष्ठ सलाहकार संपादक

कवर पेज संपादक

डॉ. आशुतोष तिवारी

अर्चिता उपाध्याय

वरिष्ठ सह संपादक

कार्टून संपादक

डॉ. सुधांशु लाल

कृतिका सिंह

वेब डिजाइन
रोशन भारती

सलाहकार परिषद

डॉ. अखिलेश पाण्डेय

डॉ. शिवमूरत यादव

प्रकाशक

UDYAM-UP 55 0010534

उज्ज्वल उपाध्याय

यशिका फाउंडेशन, मऊ

vithikaportal@gmail.com

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

पत्रिका में छपे सभी लेख
लेखक के अपने विचार हैं

वीथिका ई पत्रिका

विषय सूची :

गलियों की बात	04	
शिव ताण्डव : भोजपुरी काव्यानुवाद : राजेंद्र त्रिपाठी	05	
नारीत्व का अग्निपर्व : परिचय दास	08	
समाजे शिव : कल्याणरूपेण : डॉ. मनकामेश्वर तिवारी	12	
शिवमहापुराण में व्रतोपासना : डॉ. वंदना पाण्डेय	15	
शिव कथा - भगवान भोलेनाथ और दूध : अनिल त्रिपाठी	19	
चित भूमियाँ : विवेक मिश्रा		
शिव विवाह : चित्र : डॉ. रमेश चंद मीणा	23	
कला वीथी : संजय राय, मास्टर अर्थर्व	24	
स्मृति पुष्प : विनोद कुमार शुक्ल	25	
मनुष्यता के प्रहरी : विनोद कुमार शुक्ल : बृजेश गिरि	26	पुस्तक समीक्षा : डॉ. रमेश चंद मीणा 36
	27	कृतिका के कार्टून : कृतिका सिंह 38



Visit

WWW.VITHIKA.ORGto download this current issue to
your tablet

वीथिका ई पत्रिका

गलियों की बात

अर्चना उपाध्याय

प्रधान संपादक



शिव की साधना कठिन है, प्रस्तुत अंक अगस्त में ही प्रस्तावित था परन्तु कहते हैं न कि बाबा जब तक न चाहें उनका दर्शन तक संभव नहीं है। अतः इस बीच आयी तमाम बाधाओं को साधना का सहज पथ मान वीथिका ई पत्रिका का यह जनवरी, 2026 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। पौराणिक कथाओं में शिव और शक्ति का मिलन बताया जाता है अर्थात् दोनों का मिलन परमात्मा की पूर्णता को चरितार्थ करता है। शिव को परमात्मा का संहारक रूप माना जाता है और वहीं शक्ति असीम ऊर्जा का द्योतक है। हम कह सकते हैं के शिव व शक्ति का मिलन जीवन चक्र की पूर्णता है।

महान साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल जी का जाना रचना संसार में मनुष्यता और कविता के बीच के एक पुल का टूट जाना है। इनकी रचनाओं में जादू, यथार्थ के एकदम करीब, संवेदनशीलता व गहरे अर्थ को कौन नहीं जानता। इनके प्रसिद्ध उपन्यासों में "नौकर की कमीज", "दीवार में एक खिड़की रहती थी", "खिलेगा तो देखेंगे", गरीबी, मजबूरी, साधारण ज़िन्दगी, सपना और सच, जीवन में संघर्ष और प्रेम का अद्भुत वर्णन है। इसी तरह कविता संग्रह की बात करें तो "लगभग जय हिन्द", "सब कुछ होना बचा रहेगा" आदि हैं जिनमें जीवन के विभिन्न पहलुओं का यथार्थ चित्रण है।

अब आपकी पारखी दृष्टि के समक्ष पत्रिका का यह अंक रखते हुए आप सभी के लिए आंग्ल नव वर्ष की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं। भारतीय संस्कृति समरसतावादी संस्कृति है। ऐसा कोई भी अवसर जिसमें पुरातन से नवीन पथ पर अग्रसर होने, नये लक्ष्यों की शुरुआत करना शामिल हो उसका हम स्वागत करते हैं। सर्वाधिक आनन्द यह कि हम अपनी नित की दिनचर्या से वक्त निकालकर परिवार, दोस्त, प्रियजन के साथ मिलकर एक नवीन ऊर्जा का संचार करते हैं और यही तो हमारी संस्कृति व परंपरा का मूलमन्त्र है।

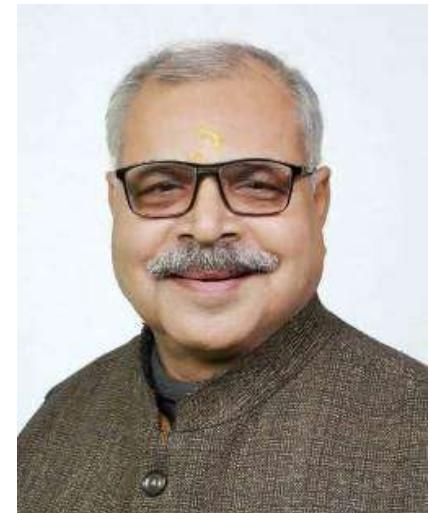
शिव तांडव स्तोत्र : भोजपुरी काव्यानुवाद

राजेन्द्र त्रिपाठी उर्फ लल्लू तिवारी
वरिष्ठ कवि
सदर मीरजापुर, उत्तर प्रदेश

घन घन बन अस जटा से निकसि गंगा-
माई कंठ व्याल-माल पावन बनावेली
शिव त्रिपुरारी प्रभु दीन दुःखहारी नाथ
नागराज माल निज गरे लटकावेलीं
डम डम डम डमरू निनाद पर
कड़के प्रचंड नृत्य तांडव मचावेलीं
उहे अनिमेष हरें सकल कलेश करें-
मंगल विशेष आ विशेषर कहावेलीं ॥ 1 ॥

जटा की कराह में प्रवाहमान देवनदी
धूमति तरंग से सुशोभित कपार बा
गतिशील धारलता विलसित हिमसुता
धधकत आगि अस जरत लिलार बा
माथ पर बाल विधु विद्यमान बाटे ओह -
भूतनाथ प्रभु से लगाव लगातार बा
शम्भु त्रिपुरारी रूप लागे मनोहारी शिव-
लोक की बिहारी जी के महिमा अपार बा ॥ 2 ॥

गिरिराजसुता पार्वती के विलास भरल
सुधर कटाक्ष से आनन्द में विभोर बा
जे कबो कृपा के एक नजरि धुमाइ दे त
बड़े बड़े विपदा के नाश पोर पोर बा
सगरो दिशा के आपन बसन बनाये बा जे
ओकरी दया के कवनो ओर बा न छोर बा
ओइसन दिगंबर सहज शिवशंकर की
तत्व की विनोद में लागल चित मोर बा ॥ 3 ॥



जेकरी जटा में लपटल विषधरन की
फन की मणि से पीत रोशनी उजाला बा
केसर नियन कान्ति दिखे दिग्वध्रुवन के
निरखि निरखि जस सिंधु मत वाला बा
मदमस्त कुंजर की चमड़ा क वस्त्र धारे
स्नेह वर्ण बाबा के ई अजबे दुशाला बा
ओही भूतनाथ जी में रमि के हमार मन
अद्भुत विनोद अनुभूति पावे वाला बा ॥ 4 ॥

जेकर खड़ाऊँ इन्द्र आदि सब देवन की
मस्तक की फूलन से धुरि धुसरित बा
शेषनाथ नागराज हार से जटा निबद्ध
व्याल माल गुहि केश खूब सुसजित बा
ओही भगवान चंद्रशेखर की करूना से
हर काम मोर मनभावन ललित बा
शास्वत टिकाऊँ अविनाशी धन संपत्ति हो
किरिपा होई त वरदान ई फलित बा ॥ 5 ॥

जेकरे लिलार पर धधकेला अन्नि ज्वाल
तेज चिनगारी कामदेव के जराये बा
बड़े बड़े देवन के गर्व चूर कइले बा
इन्द्र आदि सबका से गोड़ लगवाये बा
अमृत किरन साथ सोहे सोमकान्ति माथ
जाह्नवी जटा में चन्द्रमुकुट लगाए बा
उहे मुंडमाली शिव संपत्ति के साधक हो
दूर होखे संकट जे दुनियां पे छाये बा ॥6॥

विकराल माथ पर दहकत ताप से जे
रतिपति काम के जरावे में सफल हो
गिरिराज थिया पार्वती के सनेहि सौपि
कुच अग्र चित्रक निपुण निश्छल हो
दीनजन हीनजन छीनजन सभका पे
जेकरी कृपा के दृष्टि दया पल पल हो
ओही भवमोचन त्रिलोचन महेश्वर में
लागी रहे रीति प्रीति धारणा अटल हो ॥7॥

नयी मेघ मंडली अमावस की राति सम
सघन अन्हरिया से देहि सवंराइल बा
जगत आधार धारे दुनियां के भार, करे-
सहज सिंगार गजचर्म लपिटाइल बा
मनहर चन्द्रमा की कान्ति वाले सदाशिव-
शम्भू में निखार देहि खूब फरियाइल बा
उहे गंगाधर मोर संपत्ति बढ़ावे जाकी -
किरिपा प्रसाद बदे मन लुलुआइल बा ॥8॥

सुधर खिलल नीलकमल की कान्ति सम
शोभित बा कंठ श्याम, सुन्दर देखात बा
श्यामल प्रभा से उदभाषित बा उच्च कान्हि
हरिनी क छवि मनहरनी लखात बा
कामदेव गजासुर अंधक के नाश करि
त्रिपुर विनाशी त्रिपुरारी जे कहात बा

जग दुखहारी दक्ष यज्ञ नाशकारी प्रभु
शिव की चरन में झुकल मोर माथ बा ॥9॥

अमद भवानी की कला कदम्ब मंजरी के
माधुरी पिबत मधुकर महराज जी
शिव त्रिपुरारी हैं कामारि भवहारि दक्ष -
यज्ञ नाशकारी दुखहारी हैं जाँबाज जी
गजासुर मारे और अंधक विनासें प्रभु
आर्तनाद सुनते बचाइ लेलें लाज जी
ओही शिवशंकर के भजतानी राति दिन
जे ह जमुराजो के भी बाप जमुराज जी ॥10॥

माथ पर वेग से भुजंग फुफुकरला से
भाल पे भयंकर अग्नि दहकत बा
थिमि थिमि बाजता मृदंगम के शुभ ध्वनि
कबही ऊपर कभी नीचे उतरत बा
जइसे जइसे ध्वनि के तरंग लहरात बाटे
ओइसे ओइसे भूतनाथ पांव थिरकत बा
होइके मगन शिव तांडव प्रचण्ड करें
सारी सृष्टि जय जय जयति करत बा ॥11॥

पथरा के शैया चाहे नरम बिछौना होखे
प्रभु की सुभाव पे प्रभाव नाहीं परेला
मोतिन के माला भा भुजंग गरे डाला सदा
रहे समभाव पे कुभाव नाहीं करेला
रत्न चाहे ढेला होखे शत्रु मित्र चेला होखे
तृण हो या तरुणी दुराव नाहीं धरेला
एही सम भाव से भजबि कब शिव के जे
राजा परजा में भेदभाव नाहीं करेला ॥12॥

सुधर लिलार वाले प्रभु शिवशंकर में
दत्त चित्त होइ मन मोर उनमुख हो
छोड़ि कुविचार बर्सी गंगा की कछार, धरि

अंजुरी कपार भोलेनाथ सनमुख हों
 शिवहर शिवहर शिवहर शिवहर
 शिवहर शिव मोरी ध्यान में प्रमुख हों
 डबडबान नैन शिवमंत्र जाप बैन से
 बताईं प्रभु कहिया ले हमरा के सुख हो ॥13॥

जेहि जन मुक्तमन करे ई उत्तम पाठ
 ओकरा में सदा ई पवित्रता बनावेला
 नित्य करे ध्यान प्रभु राखे आन बान सदा
 बढे धन धान सुख संतति बढ़ावेला
 हरि गुरुदेव प्रति अविचल भक्ति रहे
 कबहूँ न केहू विपरीत गति धावेला
 शिवजी के ध्यान दूबि चिंतन करे जे नर
 मोहनाश होला आ परम पद पावेला ॥14॥

सांझि खां प्रदोष प्रभु पूजन की उपरान्त
 शिव खुश होखें सुनि तांडव ललाम से
 बढ़ी धन धाम होई दुःख के विराम शीघ्र
 बुद्धि में विकास होई मंत्र अभिराम से
 रिद्धि बढ़ी सिद्धि बढ़ी सुख आ समृद्धि बढ़ी
 विपति विनाश होई शिव सुखधाम से
 हाथी घोड़ा रथ चढि सिंधुजा सुमुखि आई
 संपत्ति अचल मिली शिव के प्रनाम से ॥15॥

नारीत्व का अग्नि-पर्व

॥ एक ॥

शब्दों की छाँव में जब ऋतु बदलती है, तो कहीं भीतर से देवी दुर्गा का स्मरण एक अज्ञात कंपन की तरह उठता है। वह केवल मूर्ति नहीं, केवल अनुष्ठान नहीं—वह स्त्री का वह बोध है, जो अपने भीतर की आग से संसार को रोशन करती है। धरती के रंग जब लाल हो उठते हैं, आकाश में ढोलक की ध्वनि गूँजती है, तब मनुष्य को अपने भीतर की किसी आदिम स्मृति का आभास होता है—मानो हम सब कभी किसी आदिशक्ति के गर्भ में रहे हों। यही वह क्षण है जब दुर्गा केवल मंदिरों में नहीं, हमारी शिराओं में उतर आती हैं। दुर्गा का नाम लेते ही जो दृश्य खुलता है, उसमें पर्वतों की कठोरता और नदी की कोमलता साथ-साथ चलती है। वह सृष्टि का संयोजन है—अभय मुद्रा में खड़ी, पर भीतर से करुणा की स्रोत। एक हाथ में अस्त्र, दूसरे में आश्वासन। कितनी सहज संतुलित है यह छवि—क्रोध और ममता का एक साथ निवास। यह वही शक्ति है जो हिंसा को भी न्याय में रूपांतरित कर देती है, और करुणा को भी निष्क्रिय नहीं होने देती। शायद इसी कारण वह 'दुर्गा' कहलाती हैं—दुर्गम मार्गों को पार करने वाली, हर बंधन को तोड़ने वाली।



परिचय दास

प्रोफेसर, नव नालंदा महाविहार

नालंदा सम विश्वविद्यालय,
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार



जब मनुष्य अपनी सीमाओं में घिर जाता है, जब वह भय और असहायता का अनुभव करता है, तब दुर्गा की उपस्थिति एक सहारे की तरह आती है। उनके दस हाथ प्रतीक हैं उन दस दिशाओं के जिन्हें हमें भीतर से जीतना है। हर अस्त्र एक अर्थ रखता है—तलवार विवेक की, त्रिशूल सत्य की, कमल निर्मलता की, और शंख वह नाद जो समस्त अंधकार को चीर देता है। वे इस बात की स्मृति हैं कि शक्ति केवल बाहरी नहीं होती; वह भीतर से प्रस्फुटित होती है—जहाँ स्त्री का अस्तित्व, मातृत्व और सृजन का रहस्य एक साथ जुड़ा होता है। हमारे लोक में दुर्गा केवल देवी नहीं, बेटी भी हैं। जब 'माँ घर आई है' का स्वर उठता है, तो उसमें भक्ति कम, आत्मीयता अधिक होती है। गाँवों में जब महिलाएँ धान की बालियों के बीच से मिट्टी उठाती हैं और उसे 'गौरी का आसन' कहकर पूजती हैं, तो वे अपने जीवन की धरती को ही देवी बना देती हैं। यह पूजा किसी स्वर्ग की देवी की नहीं, अपने श्रम, अपने आँसू, अपने प्रेम की देवी की है। यही लोकदृष्टि दुर्गा को आकाश से उतारकर धरती पर लाती है, और यही दृष्टि उन्हें शाश्वत बनाती है।

दुर्गा का युद्ध महिषासुर से है—पर वह युद्ध केवल देव-असुर का नहीं, मनुष्य के भीतर के असुर से है। वह असुर जो अन्याय करता है, जो अहंकार में डूबा है, जो स्त्री की गरिमा को नहीं पहचानता। हर युग में वह असुर किसी नए रूप में आता है—कभी सत्ता बनकर, कभी पाखंड बनकर, कभी मौन बनकर। और हर बार दुर्गा फिर अवतरित होती हैं—कभी किसी नारी के साहस में, कभी किसी कवि की वाणी में, कभी किसी माँ के आँसू में। कविता में भी दुर्गा छिपी हैं—उस पंक्ति में जहाँ पीड़ा और शक्ति एक हो जाते हैं। कवि जब 'माँ' कहता है, तो उसमें किसी पारिवारिक संबोधन का अर्थ नहीं होता, बल्कि वह उस नाद का स्मरण है जिससे सृष्टि आरंभ हुई थी। दुर्गा कविता की वही पहली ध्वनि हैं जो शब्द को अर्थ देती है। वह छंद की लय में नहीं, उस अनुगूंज में हैं जो छंद से आगे जाती है। वे समय के विरुद्ध खड़ी एक स्त्री हैं, जो अपनी आँखों से संसार को देखती ही नहीं, बदलती भी हैं। आधुनिक समय में जब स्त्री की देह और चेतना को अलग-अलग परिभाषाओं में बाँटा जा रहा है, दुर्गा की छवि फिर प्रासंगिक हो उठती है। वह यह बताती है कि शक्ति का अर्थ क्रोध नहीं, और करुणा

का अर्थ दुर्बलता नहीं। शक्ति वह है जो अन्याय के सामने झुकती नहीं, और करुणा वह जो न्याय के बिना अधूरी है। आज की स्त्री जब अपने हङ्क की आवाज़ उठाती है, तो कहीं न कहीं वही दुर्गा बोल रही होती है—जो अब शेर पर नहीं, अपने आत्मबल पर सवार है।

दुर्गा पूजा का समय केवल धार्मिक नहीं, सांस्कृतिक भी होता है। यह वह ऋतु है जब हवा में सौन्दर्य का ताप होता है, जब पत्तियों के झरने में भी उत्सव की ध्वनि सुनाई देती है। पंडालों की रोशनी, ढाक की थाप, और नारी स्वर का लयात्मक नर्तन—ये सब मिलकर एक सामूहिक कविता रचते हैं। वह कविता जो मिट्टी, संगीत और मनुष्य की स्मृतियों से बनी है। शायद इसी कारण बंगाल से लेकर बिहार तक, नदियों से लेकर नगरों तक, दुर्गा की प्रतिमा में लोग अपना ही चेहरा खोजते हैं। वह चेहरा माँ का भी है, नारी का भी, और मनुष्य का भी—जो अपने अस्तित्व को बार-बार रचता और पुनः रचता है। दुर्गा की कथा हर बार एक नई तरह से कही जाती है, क्योंकि हर युग की स्त्री नई होती है। वह अब महिषासुर से नहीं, अपने मौन से लड़ती है; वह अपने भीतर की आवाज़ को देवी बनाती है। यही दुर्गा की सबसे गहरी परंपरा है—भक्ति से आगे, आस्था से भी आगे, चेतना तक पहुँचने की परंपरा।

दुर्गा को देखना, अपने भीतर की धूल झाड़ना है। उनका स्मरण आत्मशुद्धि की तरह है। जब हम 'जय माँ दुर्ग' कहते हैं, तो अनजाने में हम अपनी अपूर्णताओं को स्वीकार करते हैं और उनसे ऊपर उठने का संकल्प लेते हैं। यही देवी की सच्ची उपासना है—मूर्तियों में नहीं, अपने कर्मों में उन्हें प्रतिष्ठित करना। क्योंकि अंततः दुर्गा कोई बाहर की देवी नहीं, भीतर की ज्योति हैं, जो बार-बार बुझी हुई दुनिया में फिर से जल उठती है। इस प्रकार दुर्गा केवल एक पर्व की नहीं, एक भाव की देवी हैं—वह भाव जो हर संकट में आशा को जन्म देता है, हर अँधेरे में प्रकाश का बीज बोता है। वह मनुष्य की वह कल्पना हैं, जो ईश्वर से भी सुंदर है—क्योंकि वह करुणा, न्याय, और सौन्दर्य तीनों को एक साथ साधती हैं। दुर्गा का यह बोध जब कविता में उतरता है, तो शब्द फूल नहीं, ज्वालाएँ बन जाते हैं—और यही ज्वाला मानवता का सबसे दीप्त रूप है।

॥ दो ॥

जब रात अपने गाढ़े अँधेरे में लिपट जाती है, और धरती के ऊपर मौन का एक विशाल परदा उतर आता है, तब भी कहीं किसी घर के आँगन में मिट्टी की दीपशिखा जलती है। वह दीपक केवल रोशनी नहीं, प्रतीक्षा है—दुर्गा के आने की। यह प्रतीक्षा किसी देवता के अवतरण की नहीं, बल्कि अपने भीतर की उस शक्ति के जागरण की है जो हर मनुष्य में सुप्त पड़ी है। जब यह जागरण होता है, तो किसी पर्व की नहीं, आत्मा की सुबह होती है। दुर्गा की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह केवल पूजनीय नहीं, आत्मीय हैं। वे हमारे मिथक में नहीं, हमारी दिनचर्या में रहती हैं। किसी स्त्री के संघर्ष में, किसी किसान के पसीने में, किसी कवि के शब्दों में वे जीवित हैं। वे उस माँ की साँस में हैं जो अपने बच्चे को भूख से बचाने के लिए स्वयं उपवास रखती है। वे उस लड़की की आँखों में हैं जो अन्याय के सामने पहली बार बोलती है। दुर्गा की मूर्ति मिट्टी की हो सकती है, पर उनकी उपस्थिति देह से कहीं बड़ी है। उनका यह रूप लोकगीतों में भी उतर आया है। भोजपुरी और मैथिली के संस्कार गीतों में ‘गौरी माई’ या ‘दुर्गा मङ्या’ का स्मरण तब होता है, जब स्त्री अपने जीवन के किसी नए मोड़ पर पहुँचती है—जन्म, विवाह या विदाई। यह स्मरण स्त्री के भीतर की शक्ति का उत्सव है। वहाँ पूजा का कोई पाखंड नहीं, केवल सहज समर्पण है। वे गीत बताते हैं कि देवी दूर नहीं हैं, वे हमारे जीवन की मिट्टी में घुली हुई हैं।

कविता जब देवी को पुकारती है, तो वह केवल आराधना नहीं करती, बल्कि अपने समय से संवाद करती है। आधुनिक कवियों ने दुर्गा को उस प्रतीक के रूप में देखा है, जो व्यवस्था के विरुद्ध खड़ी होती है। वह शेर पर आरूढ़ देवी अब कारखाने की खिड़की से झाँकती मज़दूर स्त्री भी है, जो मशीनों के शेर में भी अपनी अस्मिता का गीत गाती है। कवि की कल्पना में वह काली भी है, गौरी भी; विनाश की भी, पुनर्रचना की भी। यही उनका ललित विरोधाभास है—जो उन्हें अनश्वर बनाता है। यदि मनुष्य के इतिहास को देखा जाए तो हर युग में किसी न किसी रूप में दुर्गा की आवश्यकता रही है। जब अन्याय बढ़ता है, जब करुणा का ह्लास होता है, तब समाज स्वयं एक शक्ति को जन्म देता है। यह शक्ति स्त्री के रूप में आती है, पर उसका अर्थ लिंग से परे है। वह किसी भी मनुष्य में जाग सकती है, जो भय

से ऊपर उठे, और प्रेम से परिपूर्ण रहे। दुर्गा की कथा इसीलिए शाश्वत है—क्योंकि यह हर युग की कथा है। उनकी आँखों में जो तेज़ है, वह सूर्य का नहीं, अनुभव का है। उन्होंने अपने भीतर अंधकार को देखा है, उसे जाना है, और इसलिए वह उसे परास्त कर सकी हैं। यह परास्त करना केवल युद्ध नहीं, ज्ञान की प्रक्रिया है। जो देवी को केवल युद्ध की देवी समझता है, वह उनके आधे रूप को ही जानता है। उनका दूसरा रूप मौन का है—वह क्षण जब युद्ध के बाद वह अपने शेर को सहलाती हैं, और रक्त की गंध के बीच जीवन की सुगंध खोजती हैं। यही दुर्गा का सबसे मानवीय रूप है—शक्ति जो विनाश के बाद भी करुणा को बचा लेती है। दुर्गा की पूजा का सामाजिक अर्थ भी गहरा है। यह एक सामूहिक उत्सव है, जिसमें धर्म और कला का भेद मिट जाता है। मूर्तिकार की हथेली में जब वह आकार लेती हैं, तब उसमें श्रद्धा नहीं, सौन्दर्य का शिल्प बोलता है। रंगों का चयन, आभूषण की रेखाएँ, आँखों की कोमलता—ये सब एक सौंदर्यदर्शन हैं जो देवी को लोक की देवी बना देता है। यही कारण है कि दुर्गा का हर चेहरा अलग होता है—कभी मुस्कुराता, कभी विचारमग्न, कभी गर्व से दीप्त। लोक उसे अपने अनुसार रखता है, और वही रचना उसे जीवित रखती है। इस आधुनिक युग में जहाँ मनुष्य की आस्था अक्सर संदेह के बोझ तले दब जाती है, दुर्गा का प्रतीक एक संतुलन देता है। वह हमें याद दिलाती हैं कि शक्ति और सौन्दर्य एक दूसरे के विरोधी नहीं, पूरक हैं। आज के समय में जब हिंसा को शक्ति और आकर्षण को सौन्दर्य समझ लिया गया है, दुर्गा इस भ्रांति को तोड़ती हैं। उनका सौन्दर्य आत्मविश्वास से उपजा है, और उनकी शक्ति करुणा से। वे किसी को पराजित करने के लिए नहीं, जीवन को प्रतिष्ठित करने के लिए अस्त्र उठाती हैं।

दुर्गा की यह व्याख्या केवल धार्मिक नहीं, दार्शनिक भी है। वे प्रकृति के चक्र की प्रतीक हैं—सृजन, पोषण, और संहार का त्रित्व। वह चक्र जो ऋतुओं में चलता है, जीवन में चलता है, और कविता में भी। जब कोई पत्ता झारता है, तब वह केवल पतन नहीं, नवीकरण की तैयारी भी है। इसी भाव में दुर्गा निहित हैं—हर अंत के भीतर आरंभ की संभावना। और जब हम दुर्गा को स्मरण करते हैं, तो कहीं न कहीं अपने भीतर की स्त्री को भी स्मरण करते हैं—वह

स्त्री जो हर व्यक्ति में छिपी है, जो पोषक भी है और रक्षक भी। यह स्मरण हमें कोमल बनाता है, और दृढ़ भी। वह हमें यह समझाता है कि संसार का सबसे बड़ा चमत्कार शक्ति नहीं, संतुलन है। और यही संतुलन दुर्गा का सत्य है। इसलिए जब पंडालों की रोशनी बुझ जाती है, और देवी की प्रतिमा विसर्जित हो जाती है, तब भी उनका अर्थ समाप्त नहीं होता। वे लौट जाती हैं, पर हमारी चेतना में रह जाती हैं। वे नदी बनकर बहती हैं, वाणी बनकर गूँजती हैं, और कविता बनकर हमें भीतर से बदलती हैं। यही दुर्गा का अदृश्य चमत्कार है—वे अनुपस्थित होकर भी उपस्थित रहती हैं, मौन होकर भी बोलती हैं।

दुर्गा का स्मरण इस तरह एक आत्मसंवाद है—अपने भय, अपने साहस, अपने प्रेम और अपने विरोध से बात करने का क्षण। इस संवाद में जब शब्द नहीं मिलते, तब आँखें बोलती हैं, और आँसुओं में भी अर्थ उतर आता है। यही वह क्षण है जहाँ पूजा और कविता एक हो जाते हैं, और मनुष्य अपनी सीमाओं से मुक्त होकर अनंत में प्रवेश करता है। दुर्गा वहीं हैं—उस अनंत में, उस निःशब्द में, उस करुणा में जो जीवन को निरंतर रचती रहती है। उनकी उपस्थिति किसी मूर्ति में नहीं, किसी अनुष्ठान में नहीं, बल्कि उस साँस में है जो हर बार कहती है—“मैं अभी भी यहाँ हूँ, जहाँ शक्ति करुणा से मिलती है।”

(लेख का दूसरा भाग अगले अंक में क्रमशः.....)

समाजे शिवः - कल्याणरूपेण

भा

रतीय सांस्कृति अत्यन्त दिव्या च गौरवशालिनी अस्ति। अस्य सांस्कृतिक परम्परायाः केन्द्रबिन्दुः भगवान् शिवः एव। शिवः न केवलं विनाशकः, अपि तु पुनरुत्थानस्य, संरक्षणस्य च मूर्तिमान् प्रतीकः अस्ति। यः समाजं अधमति मोचयति, धर्मे स्थापयति, सः शिवः। अतः शिवः कल्याणस्य मूर्तिम् इत्यपि उच्यते।

शिवस्य स्वरूपविचारः

शिवः सावदैविकः तत्वम् अस्ति। 'शिव' शब्दः 'शं' (कल्याणम्) + 'वु' (कर्तरि प्रत्ययः) इति व्युत्पत्तेः, 'शिवः' इत्यस्य अर्थः 'कल्याणकारी' इति स्फुटं दृश्यते। वैदिककालादारभ्य पुराणपर्यन्तं शिवस्य महत्त्वं अपरिमितम् अस्ति। वेदेषु ठद्रः, यजुषि पथुपतिः, पुराणेषु महादेवः, आगमे च नटराजः इति विविधनामाः दर्शयन्ति तस्य सार्वभौमिकत्वम्। तस्मिन् रौद्ररूपमपि अस्ति, किन्तु तेनापि लोकरक्षणमेव लक्ष्यं। तस्मात्, शिवः नाशकारी इति न, अपि तु सर्जनशीलः विनाशकः अस्ति।

समाजे शिवस्य स्थानम्

वर्तमानसमाजे विविधदोषाः दृश्यन्ते। भ्रष्टाचारः, हिंसा, अन्यायः, नारीवञ्चना इत्यादयः। एतेषां सर्वेषां निवारणाय शिवतत्त्वं आवश्यकम्। शिवः योगी, त्यागी, समदर्थी च अस्ति। तस्य जीवनम् समाजाय एकं आदर्थम् उपस्थापयति। शिवः केवलं पूज्यदेवः न, अपि तु एकः मानवीयदर्थनिस्य प्रकाशस्तरम् अपि। तस्य जीवनम् तत्त्वं च, समाजे नैतिकता, समता, संयमः च स्थापयितुं समर्थम्। यद्यस्माकं आचरणे शिवतत्त्वं प्रतिफलति, तर्हि एव समाजः कल्याणमार्गे अग्रे स्यात्। भारतीयस्य धार्मिक-सांस्कृतिकजीवने महेशस्य विशेषं स्थानं अस्ति। शिवः इति नाम न केवलं विनाशस्य, अपि तु कल्याणस्य प्रतीकं अस्ति। सः त्रिनेत्रधारी, गङ्गाधरः, नीलकण्ठः, अर्धनारीश्वरः, पथुपतिः, योगीश्वरः, ठद्रः च इति अनेकान् ठपाणि धारयन् सर्वथा लोकहिताय समर्पितः अस्ति। अस्य समस्तठपाणि एकमेव सन्देशं वहन्ति कल्याणं करोति सः शिवः।



डॉ. मनकामेश्वर कुमार तिवारी
प्रवक्ता, श्री वनदेवी इंस्टर कॉलेज
मऊ, उ.प्र.

शिवस्य शिक्षा:

1. समत्वबुद्धिः - शिवः भूतपिशाचैः सह अपि समत्वेन व्यवहरति। एषा समद्धिः समाजे समरसतायाः बीजं भवति।
2. नारीसम्मानः - शिवः पार्वत्याः प्रति अतिशयम् श्रद्धावान्। तयोः सम्बन्धः अर्धनारीश्वर ठपेण प्रसिद्धः। अस्य भावस्य प्रचारः समाजे स्त्रीसशक्तीकरणं प्रेरयति।
3. वैराग्यम् - शिवः सर्वं परित्यज्य कैलासे रमते। अस्य वैराग्यस्य शिक्षया समाजे भौतिकतायाः अतिक्रमेण आध्यात्मिकमूल्ये प्रतिष्ठाप्यन्ते।
4. विनाशेन सर्वान् - शिवः ताण्डवं कृत्वा सृष्टेः नूतनं आरम्भं करोति। एषा चिन्तनशैली वर्तमानसमाजे परिवर्तनोत्साहं जनयति।

समाजे शिवतत्त्वस्य आवश्यकता

अद्य भौतिकवादग्रस्त युगे समाजः आत्मविस्मृत्यां गतः। मानवीयमूल्यानि लुप्तानि। एतादृशे सन्दर्भे शिवतत्त्वस्य पुनर्स्मरणं लोकार्थं परमावश्यकम्। यत्र शिवः, तत्र सत्यं, धर्मः, अहिंसा च। शिवभक्त्याः प्रभावेण लोके आत्मजानम्, कळणा च विकलितेतोशिवः केवलं देवता नास्ति, अपि तु एकः जीवनदर्थनिमित्तम् अपि अस्ति। समाजे यदा अधर्मः वर्धते, तदा शिवः ताण्डवं कृत्वा सृष्टेः धर्मपुनर्निर्मणं करोति। सः अन्यायस्य, दुराचारस्य, अत्याचारस्य च विरोधकः अस्ति। यदा समाजः पतनमार्गे चरति, तदा शिवः पुनः धर्मं स्थापयन् जनमानसस्य पुनरुद्धारं करोति।

शिवतत्त्वं समाजे कोष्ठकवत् विषदं दृश्यते

1. समत्वद्धिः - शिवस्य प्रमुखं लक्षणं समत्वम्। सः सुरासुरभूतपिशाचैः सह समभावेन वर्तते। गिरीशः अपि अरण्ये निवसति, भर्माङ्गलेपं करोति, व्याघ्रचर्मं

धरति, औपचारिकता-विलक्षणः अस्ति। एषा समद्धिः वर्तमानसमाजे जातिवर्णलिङ्गवर्गविनिर्मूलनाय अत्यावश्यकम्।

2. स्त्रीसमानतायाः प्रतीकः - अर्धनारीश्वरः शिवस्य एकं ठपं अर्धनारीश्वरः, यत्र शिवः अर्धं पार्वती अर्धीं एषः प्रतीकः दर्शयिति यत् स्त्रीपुरुषयोः समता एव सृष्टेः मूलं। यदा स्त्रियाँ उपेक्षिताः, शोषिताः, अवमानिताः च भवन्ति, तदा शिवदर्थनिं स्मार्यं नारीं विना शिवः अपूर्णः।

3. त्यागवृत्तिः - वैराग्यस्य आदर्थः शिवः कैलासे रमते, न तस्य राजमहलः, न स्वर्णभवनं, केवलं हिमालये तुषाराच्छन्ने गिरौ निवासः। तेन वैराग्यस्य, अल्पसन्तोषस्य, सादगी-जीवनस्य च सन्देशः दत्तः - "त्यागेनैव कल्याणं।"

4. कळणा - नीलकण्ठस्य दृष्टान्तः समुद्रमन्थनकाले हृलाहृलविषं उदगच्छत्। कोऽपि पातुं न इच्छति। तदा शिवः तद्विषं स्वकण्ठे स्थापयति - न निगिलति, न निष्कासयति। अयं दृष्टान्तः दर्शयिति - समाजे परपीडायाः भारं स्वीकृत्य स्वकल्याणं त्यजति सः शिवः। शिवः कळणामूर्तिः अस्ति।

5. योगीश्वरः - आत्मसंयमस्य प्रतीकः शिवः महायोगी इत्यपि प्रसिद्धः। तस्य एकाग्रता, ध्यान, समाधिस्थता, आत्मसंयमः च योगतत्त्वस्य आदर्थः अस्ति। यत्र समाजे मनोविकाराः, वासनापरवशता च वर्धते, तत्र शिवदर्थनिं आत्मनिग्रहं शिक्षयति।

6. नटराजः - सृजन-विनाश-स्थितिकर्ता शिवः नटराजरूपेण ताण्डवं करोति। एषः ताण्डवः न केवलं विनाशाय, किन्तु सृष्ट्याः पुनरारम्भाय अपि। एषा तत्त्वशैली समाजे पुरातनदोषपूर्णविचाराणां विनाशं कृत्वा नवसर्जनं प्रेरयति। ताण्डवं क्रान्ते: प्रतिकं।

शिवतत्त्वं वर्तमानसमाजे

वर्तमानकाले समाजे बहुवः दोषाः दृश्यन्ते -

- भ्रष्टाचारः
- असहिष्णुता
- स्त्रीविरोधः
- पर्यावरणविनाशः
- भौतिकतावादः
- युवानां नैतिकदुर्बलता

एतेषां सर्वेषां निवारणाय शिवदर्थिनं परमोपयुक्तम्।

भ्रष्टाचारे विळङ्घे - शिवः न्यायप्रियः शिवः सदैव धर्मनिष्ठः, न्यायकर्ता। समाजे यदा लोकः स्वार्थेन पथभ्रष्टः भवति, तदा शिवतत्त्वं धर्ममूल्ये स्थापनाय प्रेरयति। "धर्मे स्थितः शिवः, अधर्मे न अस्ति।"

स्त्रीविरोधनिवारणाय - पार्वतीपूजनम्
शिवः पार्वत्या: पूजनं करोति, तां शक्ति ठपेण स्वीकरोति। यदि शिवः शक्तिं स्वीकारति, तहि समाजोऽपि स्त्रियां समर्थं मत्वा सम्मानं दद्यात्।

पर्यावरणरक्षणाय - प्रकृतिसंवेदनरीलः

शिवः

शिवः न केवलं कैलासनिवासी, अपि तु वनदेवता अपि। नागः, वृषभः, व्याघ्रचर्म, गङ्गा, चन्द्रः इत्यादीनि तस्य आभूषणानि भवन्ति। एषा समस्तं प्रकृतेः प्रति तस्य प्रेमं दर्थयिति। अत्र तत्त्वं - "प्रकृतिरक्षायां शिवचिन्तनं आवश्यकम्।"

युवजनस्य नैतिकबलाय - शिवः आदर्थः

आधुनिकयुवकः दिग्भान्तः अस्ति। मनोरञ्जनयन्त्रैः, उपभोक्तावादेन च जीवनदिशां विस्मृतः। शिवः संयम, ध्यान, चरित्र, स्वाध्याय, आत्मसाक्षात्कार च शिक्षयन् युवानां मार्गदर्थिकः भवति।

कल्याणस्य समष्टिचिन्तनम्

शिवः केवलं व्यष्टि-कल्याणम् न, अपि तु

समष्टि-कल्याणस्य अधिष्ठानम्। तेन स्वकल्याणं त्यक्त्वा लोकस्य हितं चिन्त्यते। अस्मिन्नेव भावे, सः "लोककल्याणकः" इति प्रतिष्ठां लभते।

प्रासंगिकता

शिवः भारतीयसंस्कृते: एकः महत्वपूर्णः देवता अस्ति। सः संहारकर्ता, कल्याणकर्ता च अपि अस्ति। तस्य व्यक्तित्वं विरोधाभासयुक्तं सन्ति - सः उग्रः च सौम्यः च, भयानकः च कळणामयः च। एते गुणाः तं अत्यन्तं प्रासादिगंकं कुर्वन्ति वर्तमाने अपि वर्तमाने समाजे यत्र हिंसा, लोभः, क्लेशः च वर्धन्ते, तत्र शिवः संयमस्य, धैर्यस्य, तपस्याश्र आदर्थः अस्ति। शिवस्य ध्यानं चित्तशुद्धिं करोति, मानसिकशान्तिं ददाति च। योगस्य क्षेत्रे अपि शिवः आदियोगी इति परिगण्यते। योगाभ्यासेन जनाः तनावं, रोगं च निवारयन्ति। शिवः प्रकृतेः रक्षकः अपि अस्ति। तस्य जटासु गङ्गायाः स्थितिः, पथूनां प्रति कळणा, औषधिवृक्षेषु अनुरागः च तं पर्यावरणरक्षणाय प्रेरकं करोति। वर्तमाने पर्यावरणसंकटस्य सन्दर्भे शिवदर्थिनं पुनः विचारणीयम् अस्ति। अस्य युगस्य विकाराः - अहङ्कारः, मदः, मोहः च - नाशनीयाः सन्ति। शिवः त्रिनेत्रधारी सन् जानश्च्या तमः निवारयति। तस्मात् आध्यात्मिकद्वच्या अपि सः अतिप्रासादिंगकः अस्ति। शिवरात्र्याः उत्सवः, शिवध्यानम्, ठद्राभिषेकः इत्यादयः लोकानां अध्यात्मबोधनं कुर्वन्ति। एते उपायाः मानसिकशक्तिः वृद्धिं कुर्वन्ति च। अतः वर्तमाने शिवस्य उपदेशाः केवलं धार्मिकक्षेत्रे न, अपितु सामाजिकं, पर्यावरणीयं, मानसिकं च क्षेत्रं प्रति प्रासादिंगकाः भवन्ति। सः विनाशं करोति, किन्तु पुनः सृजनाय मार्गं अपि प्रदर्थयिति। शिवः न केवलं देवः, अपितु मानवजीवनस्य एकः आदर्थः अपि अस्ति।

शिवमहापुराण में व्रतोपासना

डॉ. वन्दना पाण्डेय
प्राचार्या, सर्वोदय पी. जी. कॉलेज
घोसी, मऊ, उ.प्र .



शिव ही अखिल ब्रह्मांड के सर्वस्व हैं, वे केवल भक्ति देखते हैं देव हो या असुर, घृणित हो या पवित्र, पापी हो या पुण्यात्मा वे किसी के प्रति भेद-भाव नहीं रखते। जिसने भी जिस कामना से उनकी उपसना की, उसे वह अलभ्य पदार्थ शिवकृपा से प्राप्त हो गया। महाशिवपुराण में अनेक स्थानों पर नाना प्रकार की उपासनाओं यथा प्रणवोपासना, लिङ्गोपासना, योगोपासना आदि का वर्णन प्राप्त होता है। विद्येश्वरसंहिता के 9 वें अध्याय में 'शिवरात्रि व्रत' की भूमिका में बताया गया है कि ब्रह्मा, विष्णु के भयंकर द्वंद्व को शांत करने करने हेतु एक अग्निस्तम्भ प्रकट हुआ। यह अग्नि-पर्वत के समान प्रकट हुआ इसलिए उस स्थान का नाम 'अरुणांचल प्रदेश' हुआ। उसी स्तम्भ से साकार शिव प्रकट हुये। उनके क्रोध से ब्रह्मा के असत्यभाषी मुख का उच्छेदन करने हेतु भौंहों से भैरवोत्पत्ति हुई। उसी समय सर्वप्रथम ब्रह्मा और विष्णु ने शिव की पूजा की जो महादेव शिव जी की प्रिय तिथि शिवरात्रि नाम से सुप्रसिद्ध हुई। भगवान् शिव ने स्वयं कहा है कि जो पुरुष शिवरात्रि के दिन जितेन्द्रिय

तथा 24 घण्टे निराहार रहकर यथाविधि, यथाशक्ति, वज्चनारहित रहकर उनकी पूजा करेगा वह वर्षभर पूजा करने पर जिस फल को प्राप्त करता है वह शिवरात्रि के एक दिन विधिपूर्वक पूजन करने से प्राप्त कर लेता है। जो पहले स्तम्भ रूप में प्रकट हुआ था, उस समय मार्गशीर्ष मास और आर्द्ध नक्षत्र था 'जो उस मास में उस तिथि को उमापति का दर्शन व पूजन करता है, वह उन्हें कार्तिकेय से भी अधिक प्रिय हो जाता है'-

आद्रायां मार्गशीर्षं तु यः
पश्यन्मामुमासखम्।

मद्वेरमपि वा लिङ्गं स गुहादपि मे प्रियः॥

(विद्येश्वरसंहिता 16/9)

शिवभक्ति जड़चेतन सभी को सुखभोग व मुक्ति प्रदान करती है। प्रातःकाल शिव की उपासना नित्यविधि का अंग है, मध्याह्नकाल की उपासना कामनाओं की सिद्धि के लिये होती है और संध्याकाल की उपासना

शान्तिदायिनी होती है। उसी प्रकार रात्रि की पूजा का फल होता है। रात के दो पहर बीत जाने पर निशीथकाल होता है। उस समय की गयी शिवपूजा विशेष फल को देने वाली होती है। शिवपुराण में रुद्रसंहिता के सतीखण्ड के 15 वें अध्याय में सती द्वारा शिव को पतिरूप में प्राप्त करने हेतु नन्दा-व्रत का विधान है जो आश्विनमास की नन्दातिथि के दिन गुड़, चावल व नमक से कार्त्तिक मास की चतुर्दशी तिथि को मालपूर तथा खीर से, मार्गशीर्ष मास में कृष्णपक्ष की अष्टमी को जौ, तिल, चावलों से, पौषमास की शुक्ल सप्तमी की रात को जागरण कर दूसरे दिन खिचड़ी से, माघ मास की पूर्णिमा को रात में जागरण कर, गीले वस्त्र धारण कर, फाल्गुनमास की कृष्ण चतुर्दशी को रात्रि में जागरण कर, विशेषकर बिल्वपत्र से, चैत्रशुक्ल चतुर्दशी को पलाश और दीना के फूलों से, बैशाख शुक्ल तृतीया को नये तिल, जौ और चावलों से, ज्येष्ठ पूर्णिमा को निराहार रहकर, वस्त्र तथा बृहती के फूलों से आषाढ़-शुक्ल-चतुर्दशी को काले वस्त्र और बृहती के फूलों से, श्रावण-शुक्ल अष्टमी तथा चतुर्दशी को पवित्र यज्ञोपवीत और वस्त्रों द्वारा, भाद्रपद कृष्णपक्ष की त्रयोदशी के दिन अनेक प्रकार के फूलों तथा फलों से शिवपूजन कर चतुर्दशी को केवल जलमय आहार ग्रहण करती हुई, इस प्रकार सम्पूर्ण 'नन्दाव्रत' को पूर्ण कर शिव ध्यान करती हुई निश्वल हो सिद्धावस्था को प्राप्त हो गई (14 से 30 वें श्लोक तक)।

विद्येश्वर संहिता के 14 वें अध्याय में वर्णन है कि सभी लोगों का कल्याण करने हेतु शिवजी ने वारों की कल्पना की, इन वारों की पूजा का फल यह है कि वे अपने स्वामियों को प्रसन्न करने वाले होते हैं और देवताओं की पूजा का फल देने वाले केवल शिवजी हैं। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए 5 प्रकार की पूजा कही गयी है मन्त्र, जप, होम, दान

और तप। नेत्ररोग, शिरोरोग एवं कुष्ठरोग के निवारण के लिये रवि ही देवता है जिसका दिन रविवार है। सोमवार सम्पत्ति, मंगलवार-रोगशान्ति, बुधवार- पुष्टि, गुरुवार- आयुर्वृद्धि, शुक्रवार सुखभोगप्राप्ति, शनिवार- मृत्युनाश के लिए अभीप्सित पूजनदिवस हैं -

**आरोग्यं सम्पदश्वैव व्याधीनां शान्तिरेव ।
पुष्टिरायुस्तथा भोगो मृतेहानिर्यथाक्रमम् ॥
21/14**

रुद्र-विद्येश्वरसंहिता के सृष्टिखण्ड के 14 वें अध्याय में अलग-अलग पदार्थों को शिवजी को अर्पित करने का अलग-अलग फल बताया गया है। शिवजी की पूजा में 1 लाख संख्या सर्वत्र होगी। मुक्ति की इच्छा वाला कुशों से, दीर्घायु के लिए दूब से, पुत्रप्राप्ति हेतु धतूर के फूलों से, अगस्त के फूल यश की कामना से, सुखभोग एवं भक्ति की कामना से तुलसीपत्र, मदार, कल्हार या किसी भी श्वेतपुष्प से, आभूषणप्राप्ति हेतु गुलदुपहरिया के फूलों से, घोड़ों की प्राप्ति हेतु चमेली के फूलों से, अलसी (तीसी) के फूलों से विष्णु-प्रेम, शमीपत्रों से मुक्ति, मल्लिका के फूलों से सुन्दर स्त्री, जूही के पुष्पों से घर में धान्यों का सद्भाव, कनेर के फूलों से वस्त्र तथा सम्पत्ति की प्राप्ति, निर्गुण्डी के फूलों से मन की निर्मलता तथा 1 लाख बिल्वपत्र चढ़ाने से सभी इच्छाओं की प्राप्ति बतायी गयी है। हरसिंगार से सुखसम्पत्ति की प्राप्ति और राई के फूलों को चढ़ाने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है। इनके 1 लाख फूल चढ़ाने से महान् फल मिलता है। केवड़ा तथा चंपक को छोड़कर सभी पुष्प शिव को प्रिय हैं। अन्न द्वारा भी शिवपूजा का विशेष फल होता है। शिवजी पर चावलों को (1 लाख) चढ़ाने से धन बढ़ता है, तिल से महापापों का विनाश, जौ से स्वर्गसुख, गेहूँ से सन्तानवृद्धि,

मँगों से सुखप्राप्ति, प्रियंगु या कगुनी से धर्म-अर्थ-काम की वृद्धि, राई से शत्रु की मृत्यु, सरसों से तथा काली मिर्च से शत्रुनाश और अरहर के पत्तों से शिवपूजन करने से अनेक सुखों की सम्प्राप्ति होती है (रुद्रसंहिता सृष्टिखण्ड)।

शिवपूजा के बाद उन पर जलधारा डालनी चाहिए, सुख व सन्तानवृद्धि के लिये धारापूजन उत्तम है। शिवजी के ऊपर धी की धारा डालने से वंश-विस्तार होता है। जड़बुद्धि को बुद्धि प्राप्ति हेतु चीनी मिश्रित दूध की धारा से पूजन करना चाहिए। यह पारिवारिक कलह एवं कष्ट को भी दूर करने वाली होती है। शत्रुओं को कष्ट देने हेतु तेल की धारा से, सुगन्धित तेल की धारा से सुखभोगों की प्राप्ति हेतु, मधुधारा से यक्षराज के भय से शांति, ईर्ख के रस की धारा से आनन्दप्राप्ति और गंगाजल की धारा से भुक्ति तथा मुक्ति हेतु पूजन करणीय है। 25 से 81 श्लोंकों में यह शिवपूजनविधान वर्णित है।

शिवमहापुराण के कोटिरुद्रसंहिता के 37 वें अध्याय में भगवान् शिव के भुक्ति-मुक्तिदायक अनेक व्रतों का वर्णन है, जिनमें दस को मुख्य कहा गया है -

1. प्रत्येक अष्टमी को रात्रि में ही भोजन करना चाहिए, विशेष करके कृष्णाष्टमी के दिन उपवास करना चाहिए (11/38)।
2. शुक्लपक्ष की एकादशी के दिन उपवास और कृष्णपक्ष की एकादशी को शिवपूजन कर रात में भोजन करने का उपदेश है (12/38)।
3. शुक्लपक्ष की त्रयोदशी के दिन रात में तथा कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को शिवव्रती के भोजन करने का विधान वर्णित है (13/38)।
4. दोनों पक्षों में सोमवार के दिन सभी शिवभक्त रात्रि में भोजन करें। (14/38)

इन सभी व्रतों में शिवभक्त ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। मुक्तिमार्ग के जानने वालों को ये व्रत नियम से करने चाहिए क्योंकि ये निम्नलिखित चारों

बातें मुक्ति देने वाली हैं- शिवार्चन, रुद्रजप, शिवालय में रहकर उपवास और वाराणसी में रहकर मृत्यु। इनसे शाश्वत मुक्ति प्राप्त होती है (18/38)। सोमवार की अष्टमी और कृष्णपक्ष चतुर्दशी को सोमवार ये दोनों पर्व शिवजी को प्रसन्न करने वाले हैं। इन चारों में भी शिवरात्रि व्रत सबसे बलवान् है, इसलिए भुक्ति और मुक्ति को चाहने वाले पुरुष उसी को करें। इस व्रत से बढ़कर मनुष्यों का हितकर और कोई व्रत नहीं है। यह व्रत सभी धर्मकर्मों में श्रेष्ठ है। सभी वर्णों, आश्रमों, निष्काम सत्काम, स्त्री-पुरुष तथा बालकों सभी के लिये उत्तम है (23/38)। माघमास के कृष्णपक्ष में अर्धरात्रि में होनेवाली शिवचतुर्दशी विशिष्ट कही गयी है, इसकी उपासना करने से करोड़ों हत्याओं से मुक्ति मिलती है। उस व्रत का विधिपूर्वक वर्णन करते हुये भगवान् शिव ने कहा है- "उस दिन प्रातःकाल आलस्यरहित हो उठे, नित्यक्रिया से निवृत्त हो शिवालय में जाकर यथाविधि शिवपूजन कर व्रत का संकल्प ले। तत्पश्चात् उत्तम स्थान में जो शास्त्रप्रसिद्ध शिवलिंग हो, प्रथम रात्रि वहीं जाकर, शिवजी के दाहिने या पश्चिम की ओर पूजनसामग्री रखकर संकल्पपूर्वक स्नान करे। वस्त्रधारण कर तीन बार आचमन करके पूजा का प्रारम्भ करे। मन्त्रपूर्वक द्रव्य समर्पित करे, मन्त्रोच्चारण के बिना शिवपूजन न करे। भक्तिभावयुक्त हो गीत, वाद्य तथा नृत्य करे पुनः 'ॐ नमः शिवाय' का मन्त्रजप करते हुए पार्थिव शिवलिङ्ग बनाये और नित्यक्रिया करके पार्थिव लिङ्ग का पूजन करे। रात्रि के चारों प्रहरों में शिवजी की चारों मूर्तियों का आवाहन से लेकर विसर्जनपर्यन्त पूजन करे। उत्सवपूर्वक रात्रिजागरण करे। फिर प्रातःकाल स्नान करके शिवजी की स्थापना

करके उनकी पूजा, प्रार्थना करे। व्रत पूर्ण हो जाने पर बारम्बार शिवजी को प्रणाम करे। फिर शिवजी की प्रार्थना करते हुए पार्थिवलिङ्ग का विसर्जन कर दे। यथाशक्ति ब्राह्मणों एवं साधुओं को भोजन कराकर तब स्वयं भोजन करे। रात्रि के प्रत्येक प्रहर में विशेषकर शिवरात्रि के दिन शिवपूजन करे। इसका वर्णन करते हुए स्वयं भगवान् शिव कहते हैं कि—“पहले प्रहर में स्थापना किये हुये पार्थिव शिवलिङ्ग की समस्त उपचारों से भक्तिपूर्वक पूजा करे। पहले पञ्चामृत के पाँच द्रव्यों को अलग-अलग मन्त्रों का उच्चारण कर उन्हें समर्पित करे। तत्पश्चात् इस प्रकार जलधारा चढ़ाये कि पञ्चामृत के सभी द्रव्य धुल जायें। 108 नाममन्त्रों को पढ़कर जलधारा दे। उत्तम चन्दन अखण्डित चावलों तथा काले तिलों से शिवपूजन करे। सौ पंखुड़ियों वाले कमलपुष्पों या कनेर के पुष्पों को शिवजी के 8 नामों का उच्चारण कर उनपर चढ़ाये। क्रमशः धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाये, और अर्घ्य श्रीफल देकर फिर पान चढ़ाये। नमस्कार, ध्यान, शिवमन्त्र का जाप करे। धेनुमुद्रा को दिखाकर निर्मल जल से तर्पण करे। शक्ति के अनुसार पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराये। जब तक एक प्रहर न हो जाये तब तक महोत्सव करे। उसके बाद पूजा के लिये फल समर्पित कर विसर्जन करे। दूसरे प्रहर में संकल्प कर या चारों प्रहरों का एक साथ संकल्प कर उसी प्रकार पूजा करे। पहले तिल, यव तथा कमलपुष्पों से विशेषकर बिल्वपत्रों से परमेश्वर की पूजा करे। बीजपूर फल रखकर अर्घ्य दे, नैवेद्य में खीर दे। मन्त्रों की आवृत्ति पहले से ही कर दे। ब्राह्मणों को भोजन कराने का संकल्प कर सब पूजन दूसरे प्रहर की समाप्ति तक पहले प्रहर की भाँति करे। तीसरे प्रहर में जौ के स्थान में गेहूं और मदार के फूल चढ़ाये। नैवेद्य में मालपुओं तथा शाकों को अर्पित करे। कपूर से आरती कर दाढ़िम फल के साथ अर्घ्य

दे तथा दूना जप करे। इसके पश्चात् दक्षिणा सहित ब्राह्मणभोजन का संकल्प करे, नृत्यगीत करते हुये तीसरा प्रहर व्यतीत करे। चौथे प्रहर के आने पर उसका विसर्जन करे। उक्त प्रयोगों को पुनः करके विधिवत् पूजा करे। उड़द, कंगनी, मूँग अथवा सप्तधान्यों से, शंखपुष्पी तथा बेलपत्रों से परमेश्वर का पूजन करे। चौथे प्रहर में केले के फल से युक्त अर्घ्य दे अथवा अनेक फलों से युक्त अर्घ्य दे। पहले से दूना मन्त्रजप करे। इसके बाद ब्राह्मणभोजन का संकल्प कर तथा भक्तिपूर्वक नाच-गाना करते हुये जब तक अरुणोदय न हो जाये, उत्सव करे। सूर्योदय हो जाने पर शौचस्नानादि से निवृत्त हो अनेक उपहारों द्वारा शिवपूजन करे, फिर अपना अभिषेक कराये। प्रहरों की संख्या से अनेक प्रकार के दान दे, ब्राह्मणों तथा साधुओं को विविध भोज्य पदार्थों को खिलाये, शिवजी को पुष्पांजलि चढ़ाकर प्रार्थना करे। ब्राह्मणों से आशीर्वाद लेकर तब आवाहित शिवजी का विसर्जन करे (82)।

इस प्रकार जो शिवव्रत करता है, शिवजी उससे दूर नहीं रहते। उसका फल कहा नहीं जा सकता और उस भक्त के लिए कुछ भी अदेय नहीं है। अनायास ही जिसने यह किया, उसके हृदय में मुक्ति-बीज उत्पन्न हो गया। मनुष्यों को यह 'शिवरात्रिव्रत' चौदह वर्षों तक करना चाहिए। उसके बाद उद्यापन कर देना चाहिए, जिसमें होम, गोदान, बैल पर बैठी शिवमूर्ति, आभूषणों से अलंकृत कर आचार्य को देने का विशेष महत्त्व है। यह तभी तप और जप, व्रत, तीर्थ, दान यज्ञों में सर्वोत्तम है। इसे 'व्रतराज' कहते हैं।

(लेख का शेष भाग अगले अंक में क्रमशः ...)

भगवान भोलेनाथ और दूध !

क्यों अर्पित करते हैं भगवान भोलेनाथ को दूध !



अनिल त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार, दूरदर्शन
प्रयागराज, उ.प्र.
कैलाश पर्वत पर इतना
सन्नाटा..!
चिरपरिचित उल्लास भी
नदारद..!!
ऐसा तो कभी नहीं होता..!!!
कैलाश का ये दृश्य देख नारद
मुनि अचंभित थे। चिंतित हो
महादेव को ढूँढने लगे, वही इस
स्थिति का कारण स्पष्ट कर
सकते हैं। शीघ्र ही उस शिला के
निकट पँहुचे जिस पर आँखे बंद
किये महादेव विराजे थे।
किंतु यह क्या..!

कैलाश पर्वत पर इतना सन्नाटा..! चिरपरिचित उल्लास भी नदारद..!! ऐसा तो कभी नहीं होता..!!! कैलाश का ये दृश्य देख नारद मुनि अचंभित थे। चिंतित हो महादेव को ढूँढने लगे, वही इस स्थिति का कारण स्पष्ट कर सकते हैं। शीघ्र ही उस शिला के निकट पँहुचे जिस पर आँखे बंद किये महादेव विराजे थे। किंतु यह क्या..!

जटायें बिखरी हुई, उनपर सुशोभित होने वाले चन्द्रदेव अब गिरे कि तब गिरे वाली स्थिति में किसी तरह संतुलन साधने का जतन कर रहे हैं, और नागवासुकि..! वो भी कसमसाते हुए बस जैसे तैसे स्वयं को भोलेनाथ के कंठ में स्थिर रख पा रहे हैं। ये दृश्य देख पहले से अचंभित नारद मुनि और आशंकित हो उठे। महादेव को इतनी अस्तव्यस्त अवस्था में उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था..! किसी तरह स्वयं को संतुलित करते अभिवादन किया - "नारायण नारायण"..

किंतु कोई उत्तर नहीं। सामान्यतः तो नारायण उच्चारण मात्र सुनते ही महादेव प्रफुल्लित हो जाते हैं, उनके अधरों पर स्वतः मुस्कान तैर जाती है, यहाँ तक कि ध्यानमग्न ही क्यों न हों, फौरन नेत्र खुल जाते हैं, किंतु आज नारायण का नाम सुनने के बाद भी कोई प्रतिक्रिया नहीं..!

ऐसा कैसे संभव है ..?

नारद मुनि की चिंता प्रतिपल बढ़ती जा रही थी। उन्हें लगा कहीं ऐसा तो नहीं उनका स्वर ही मद्दिम रहा हो जिसे महादेव नहीं सुन पाये। उन्होंने पुनः ऊँचे स्वर में दोहराया -

'नारायण नारायण..', किंतु परिणाम में कोई परिवर्तन नहीं। भोलेनाथ पूर्ववत चिंतामग्न, स्थिर, अविचलित ! अचंभित नारदमुनि अवाक..! इससे पहले कि वो और कोई उपक्रम

करते, नागवासुकी महाराज महादेव के कंठ से विरत हो देवरूप धारण कर नारद मुनि के निकट आकर बोले - "पधारिये देवर्षि, कैलाश पर आपका स्वागत है।" उकताये स्वर में नारद मुनि बोले - "अरे ये आगत-स्वागत छोड़िये नागदेवता, मुझे तो बस ये बताइये कि आज ऐसा क्या घटित हुआ है कि सम्पूर्ण कैलाश उदास प्रतीत होता है ! आचार्य नंदी कहाँ हैं..? और आप..! आप महादेव का कंठ त्याग मेरे निकट क्यों आ गये..!?" महादेव इस तरह अस्तव्यस्त और इतना चिंतामग्न कि 'नारायण' का नाम सुनकर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं..!"

प्रश्नों की झड़ी सुन देवरूपी नागवासुकि बोले - "अब क्या कहूँ देवर्षि, ये जो कुछ भी है सब आपके नारायण की ही तो कृपा है।"

नारद मुनि चौंकते हुए बोले - "ये क्या कह रहे हैं नागदेवता..! भला इसमें नारायण की क्या भूमिका..?"

नागवासुकि अधरों पर मुस्कान सजाते बोले - "मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ देवर्षि, ये सब नारायण का ही किया धरा है। उधर वो कृष्णावतार ले भूलोक पर लीलायें कर रहे हैं और इधर देवलोक रिक्त होता जा रहा है। जिसे देखो वही भागा चला जा रहा है ब्रजभूमि की ओर। सारे देवी देवता बस उन्हीं की लीला देखने को लालायित हैं। आप ने जिज्ञासा प्रकट की थी न कि नंदी महाराज कहाँ हैं..? वो भी वहीं गये हैं। महादेव को यहाँ छोड़ अन्य देवताओं के संग हो लिये। नारदमुनि व्यग्र हो बोले - "ये आप कैसी पहेली बुझा रहे हैं नागदेव..! बालकृष्ण की लीला का महादेव की चिंता से क्या लेना देना..!?"

नागवासुकि बोले - "मुनिश्रेष्ठ है लेना देना। हमारे महादेव को चिंता सता रही है कि नारायण के रामावतार के समय भले ही वानर रूप धारण करना पड़ा किंतु हनुमंतलाल के रूप में रुद्रावतार ले वो प्रभु के सहयोगी के रूप में साथ तो थे, उनके काम तो आये, किंतु इस बार..! इस बार न जाने कितने कल्पों के ऋषि-मुनि, देव-गंधर्व आदि सबने गोप-गोपियों और अन्य प्राणियों के रूप में ब्रजभूमि में जन्म लिया, किंतु एकमात्र हमारे महादेव ही हैं जिन्हें कोई स्थान नहीं..! किसी भी सेवा से वंचित..! आपको तो ज्ञात है मुनिवर कृष्णावतार में नारायण कैसी-कैसी और कितनी अद्भुत, कितनी मधुर-मनोहर लीलाएं करने जा रहे हैं। अब आप ही बताइये पूरे ब्रह्मांड में मेरे महादेव से श्रेष्ठ अन्य कोई विष्णुवल्लभ है क्या ! और वही इस विलक्षण घटनाक्रम के प्रत्यक्ष भागीदार बनने से वंचित हो गये..! ऐसे में निराश-चिंतित न हों महादेव तो और क्या करें..?"

अभी तक नाना प्रकार की चिंता-आशंकाओं में गोते लगा रहे नारदमुनि नागवासुकि महाराज की ये बातें सुन ठाकर हँस पड़े। वो नागवासुकि महाराज की बातों का बिना कोई उत्तर दिये सीधे देवाधिदेव के निकट पँहुचते ऊँचे स्वर में बोले - "अब मैं क्या कहूँ नागदेवता, मैं आया तो था यहाँ महादेव को सूचित करने कि कृष्ण कन्हैया ने उन्हें स्मरण किया है, किंतु यहाँ ये ध्यानमग्न हैं तो क्या करूँ, चलता हूँ नारायण नारायण।"

नारद मुनि के ये शब्द कान में पड़ते ही चिंतामग्न महादेव की तन्द्रा एक झटके में भंग हो गई। ऐसा लगा जैसे अचानक मरुथल में स्वातिवृष्टि हो गई हो। अकुलाहट मिश्रित प्रफुल्लित स्वर फूट पड़े - "अरे रुकिये-रुकिये मुनिवर, क्या कहा आपने? प्रभु श्रीकृष्ण ने मुझे स्मरण किया! क्या कहा उन्होंने?" नारद मुनि हँसते हुए बोले - "महादेव अभी तो वो शैशवावस्था में हैं, वो क्या कहेंगे। हाँ श्री नारायण ने अवश्य उनसे सम्बंधित कुछ संदेश भेजा है आपके लिये। उन्होंने कहा है कि जाओ महामृत्युंजय महादेव को सूचित करो कि शिशु कृष्ण के प्राण संकट में हैं, वही उन्हें बचा सकते हैं।" महादेव क्रोधित होते बोले - "क्या कहा आपने? हमारे प्रभु के प्राण संकट में हैं! कौन है जो उनके प्राण हरना चाहता है? मैं भस्म कर दूँगा उसे, आप अविलंब मुझे पूरी बात बताइये।" नारद मुनि बोले - "शांत हो जाइये महादेव, भस्म नहीं करना है, बल्कि आपको वो करना है जो नारायण ने कहा है।" भोलेनाथ अधीर होते बोले - "हाँ, तो बताइये न क्या कहा है नारायण ने, क्या करना है मुझे?" नारदमुनि बोले - "महादेव आप तो जानते हैं भगवान कृष्ण अभी शिशुरूप में हैं। और शिशु की स्वाभाविक रुचि-प्रवित्ति होती है दुग्धपान करना। इसी का लाभ उठाकर एक कुटिल स्त्री छद्मवेश धारण कर दुग्धपान के बहाने उन्हें विषपान कराने का षड्यंत्र रच रही है। अतः आपके लिये नारायण का संदेश है कि यह अशुभ-अनिष्टकारी घड़ी आने पर आप बालकृष्ण के अधरों पर विराजमान हो जायें, आपको तो विषपान का अभ्यास है। अतः विषपान आप कर लेंगे और बालकृष्ण दुग्धपान। इस तरह संकट टल जायेगा।"

कृष्ण के प्राण संकट में जान क्रोध की दिशा में बढ़ रहे महादेव नारदमुनि का यह संदेश सुन ठहाका मार कर हँसते हुए बोले - "ठीक कहा मुनिवर नारायण ने, मुझे विषपान का अभ्यास है सो मैं विष पी लूँ और उन्हें तो क्षीरसागर अर्थात् दूध के समुद्र में रहते दूध पीने की आदत है सो कृष्णावतार में भी वो दूध ही पियेंगे। कोई बात नहीं, उनसे कहियेगा निश्चिंत रहें उनके निर्देश का पालन होगा।" इसके बाद क्या हुआ, पूतना वध की कथा सबको ज्ञात है।

समय बीता। नारदमुनि विचरण करते पुनः कैलाश पर्वत पँहुचे। महादेव का अभिवादन किया - "नारायण, नारायण"। इस बार देवाधिदेव ने स्वभावतः अधरों पर मृदु मुस्कान लिये उनका स्वागत किया - "आइये, आइये मुनिवर, बताइये अब कहाँ पंहुचना है विषपान करने। (हँसते हुए) कैसी विडंबना है कि क्षीरसागर में रहने वाले नारायण का कृपापात्र आप जैसा भक्त विषपान का निमंत्रण देते विचरण कर रहा है! और हाँ मुनिश्रेष्ठ तनिक ये भी तो पूछिये कभी श्री नारायण से कि अभी और कितना विषपान करना है मुझे!"

हाथ जोड़ झोंपते हुए नारदमुनि बोले - "लज्जित न करें महादेव, पूतनावध प्रकरण में किया गया आपका कटाक्ष स्मरण है नारायण को। उसी संदर्भ में उनका संदेश लेकर ही तो उपस्थित हुआ हूँ मैं आपकी सेवा में।"

विस्मित स्वर में महादेव बोले - "अच्छा..! शीघ्र बताइये क्या है श्री नारायण का संदेश..!"

नारदमुनि बोले - "हे देवाधिदेव नारायण ने कहा है कि उन्हें ज्ञात है कि आप विषपान करते करते थक गए हैं और इसी कारण अब आपकी इच्छा दुग्धपान करने की है। अतः श्री नारायण ने आपकी आकांक्षा का सम्मान करते हुए विधान-वरदान दिया है कि आज से अनंतकाल तक उनके और आपके सभी भक्त दुग्धपान की आपकी इच्छापूर्ति करेंगे। इससे आपके कंठ स्थित विष का शमन होगा, आपको शीतलता प्राप्त होगी। जो भक्त अपने जीवन में मात्र एक बार भी श्रद्धाभाव से दूध की मात्र कुछ बूंदें देवाधिदेव को अर्पित करेगा, वह श्री नारायण के हृदय में वास करेगा, उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे।"

इतना कह नारदमुनि अंतर्ध्यान हो गये। बस तभी से देवाधिदेव महादेव को दूध अर्पित करने और दूध से रुद्राभिषेक करने की परंपरा चली आ रही है।

चित् भूमियां

वि वे क

मि श्रा



• विन्दु से विस्तार तक

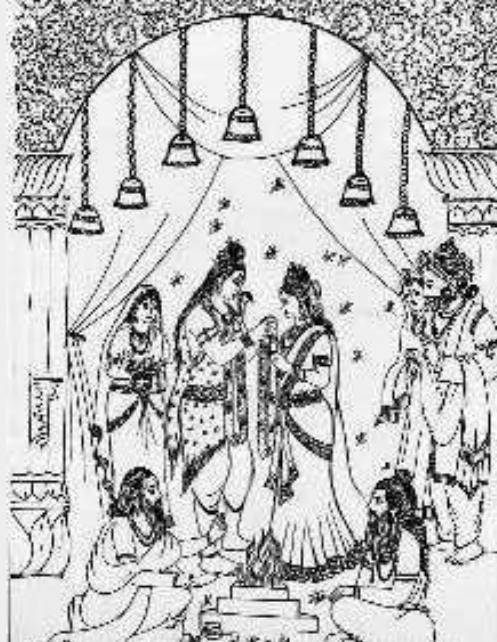
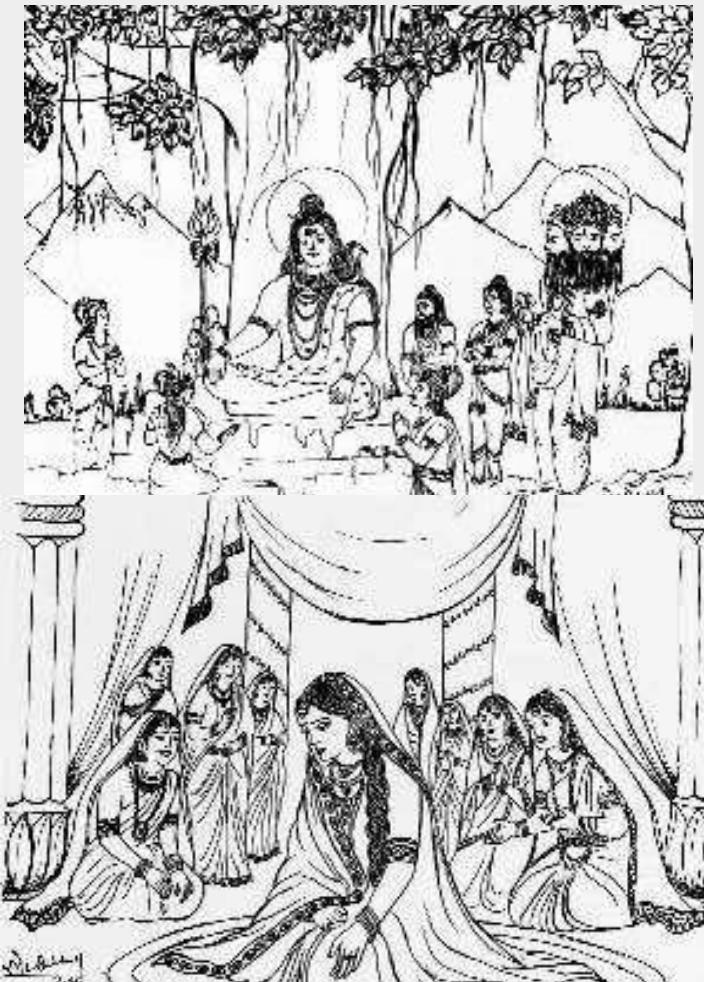
विन्दु से विन्दु
विन्दु से लोहा
लोहा, लिपाईं
विलाल केनवात पर उत्तरे रहे
जीवन के धूप-शाही रंग में
गते हैं मसूर-दायों के गीत
उन दायों के लिए लिखते हैं
जिनके लिए अचार लपते थे
जिनके लपते में गेंती लावड़ धी बुलों
उनके लपते में रंग सुखाड़ों और
दूनी के जबड़ा चल पड़े तो
उनके लपते के अर्थ जी लुले
और उन कुम दृश्य के पदों में बो ख
पा, वह लब देखते देखते खुल गया
हर विन्दु तो जो रुकाएं-रखीं
वे जीवन का विनाई लेकर-पले
अपने नाम रुकाएं का उत्तिराम
अपक-चलीं-इस रहड़े संस्कृति
विन्दु के पर्यंत रुकाएं और संस्कृति
गाला खुल पड़ी-पल पड़ी-
विनाई कुराई मिश्रा

विवेक मिश्रा,
प्रसिद्ध लेखक, कवि
कोटा, राजस्थान

डॉ. रमेश चन्द मीणा

सहायक आचार्य- चित्रकला

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा,
राजस्थान



शिव विवाह - चित्र





चित्र : संजय राय
सहायक अध्यापक, कला
भदाव इंटर कॉलेज, मऊ



चित्र : मास्टर अर्थर्व
प्रयागराज





स्मृति पुष्प

विनोद कुमार शुक्ल

वीथिका ई पत्रिका परिवार

अब कभी मिलना नहीं होगा ऐसा था
और हम मिल गए
दो बार ऐसा हुआ

पहले पन्द्रह बरस बाद मिले
फिर उसके आठ बरस बाद

जीवन इसी तरह का
जैसे स्थगित मृत्यु है
जो उसी तरह बिछुड़ा देती है,
जैसे मृत्यु

पाँच बरस बाद तीसरी बार यह हुआ
अबकी पड़ोस में वह रहने आई
उसे तब न मेरा पता था
न मुझे उसका।

थोड़ा-सा शेष जीवन दोनों का
पड़ोस में साथ रहने को बचा था
पहले हम एक ही घर में रहते थे।

मनुष्यता के प्रहरी : विनोद कुमार शुक्ल

मनुष्यता बची रहेगी तो सब कुछ होना बचा रहेगा



बृजेश गिरी
प्रवक्ता, जैश किसान इंटर
कॉलेज,
घोसी, मऊ, ३.प्र.

हिन्दी साहित्य का विद्यार्थी होने के नाते इसका अफसोस है कि मुझे जितना पहले विनोद कुमार शुक्ल को जानना चाहिए था उतना पहले मैं नहीं जान पाया। यह बात अलग है कि तैयारी के दौरान प्रतियोगी परीक्षाओं में उनकी रचनाओं से संबंधित प्रश्नों के पूछे जाने कारण उनके नाम से परिचित ज़रूर रहा। हिन्द युग्म ने दीवार में एक खिड़की रहती थी उपन्यास को (1996 में वाणी से प्रकाशित) प्रकाशित कर इसकी बिक्री से मात्र ४० मर्हीनों में विनोद कुमार शुक्ल को ३० लाख रुपये की रायल्टी देने का दावा किया तो साहित्यिक दुनिया से बाहर आमजन का भी ध्यान शुक्ल जी की तरफ़ गया। रायल्टी पर छिड़ी इस बहस ने शुक्ल जी और उनकी रचनाओं के विषय में मुझे भी गंभीरता से सोचन-समझने पर विवरण कर दिया। विनोद कुमार शुक्ल की साहित्यिक जीवन के विषय में बात की जाए तो कविता संग्रहों में लगभग जयहिंद, वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह, सब कुछ होना बचा रहेगा, अतिरिक्त नहीं, कविता से लंबी कविता, आकाश धरती को खटखटाता है, पचास कविताएँ, कभी के बाद अभी कवि ने कहा -

चुनी हुई कविताएँ प्रतिनिधि कविताएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। नौकर की कमीज, खिलेगा तो देखेंगे, दीवार में एक खिड़की रहती थी, हरी धास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़, यासि रासा त, एक चुप्पी जगह विनोद शुक्ल के चर्चित उपन्यासों में शामिल हैं। इसके अतिरिक्त इनके कई कहानी संग्रह जैसे- पेड़ पर कमरा, महाविद्यालय, एक कहानी व घोड़ा और अन्य कहानियाँ आदि की अपनी विशेष पहचान हैं।

साहित्य अकादमी पुरस्कार, गजानन मुक्तिबोध फेलोशिप, रजा पुरस्कार, शिखर सम्मान, राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, हिंदी गौरव सम्मान एवं पैन-नाबोकोव जैसे कई बड़े पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित विनोद कुमार शुक्ल जितने बड़े रचनाकार थे उतने ही सरल व्यक्ति। उनकी सरलता का परिचय उनकी बातों से मिलता है। कई साक्षात्कारों में उन्होंने बताया है कि मैं कभी घुमक्कड़ किस्म का व्यक्ति नहीं रहा, ज्यादा बाहर नहीं निकला। शुरू से ही पढ़ने-लिखने में लग जाने के कारण कभी-कहीं चाहकर नहीं गया। हाँ, मुझे मेरे लिखने-पढ़ने के कारण भारत या भारत के बाहर बुलाया गया तो मैं वहाँ गया। मेरे पास समय की कमी थी और मुझे ऐसा लगता था कि मेरा सारा समय अपने घरवालों के साथ बीत जाता है। मैं बहुत स्थानिक किस्म का व्यक्ति रहा हूँ और मुझमें जितनी भी वैश्विकता की जानकारी है वह अधिक स्थानीयता की वजह से है।

विनोद कुमार थुक्कल मानते थे कि हम जितने स्थानिक होंगे, उतने वैश्विक होंगे । थुक्कल जी मनुष्य की गरिमा को बचाए रखने वाले रचनाकार थे जो कहते थे अच्छा मनुष्य बनने के लिए मैंने बराबर संघर्ष किया है। हम मरते दम तक एक अच्छा मनुष्य बनने की कोशिश करते हैं । ये लिखना- पढ़ना भी उसी कोशिश की कथा है । मेरी आस्था मनुष्यता की तरफ़ है ।

आज के इस आभासी दौर में मनुष्यता को बचाए रखना एक बड़ी चुनौती है मेरा मानना है कि यदि मनुष्यता बची रहेगी तो सब कुछ होना बचा रहेगा । जीवन की समस्याओं से बड़ी सहजता से लड़ने और निराशा के दौर में उम्मीद को बचाए रखने वाले श्रेष्ठ रचनाकार विनोद कुमार थुक्कल हमारी स्मृतियों में सदैव बसे रहेंगे।





डी एम मिश्रा
वरिष्ठ ग़ज़लकार
सुल्तानपुर उ.प्र. ग़ज़ल

(1)

बंद कर देना बहुत आसान है
 पर, वो मेरे घर का रोशनदान है

तोड़ने पर जिसको आमादा है तू
 वो ही ऊपर जाने का सोपान है

कल जो घोड़े पे थे हैं अब गधे पर
 वक्त ये सचमुच बड़ा बलवान है

खाल ने यारो किया ऐसा कमाल
 भेड़िया भी दिख रहा इंसान है

मैंने ये देखा है अक्सर दोस्तो
 श्वेत, काले लोगों का परिधान है

कौन जानेगा मगर अंदर की बात
 चरण - चुंबन से मिला सम्मान है

ग़ज़ल (2)

भीड़ से बाहर निकल कर आइए
 इस समंदर में न गुम हो जाइए

फ़ायदा इकला ही चलने में मिले
 मेले में आये तो धक्के खाइए

आप अपनी बात पर क़ायम रहें
 आप अपने ही सुरों में गाइए

जिसको जो कहना है वो कहता रहे
 आप बिल्कुल भी नहीं घबराइए

क्या पुरानी लीक पर चलते रहें
 रास्ता कोई नया दिखलाइए

झुंड में भेड़े हैं मरती दोस्तो
 इससे अच्छा है कि मगहर जाइए

जो रचें, जैसा रचें, मौलिक रचें
 दूसरों को भी यही बतलाइए





अजीत कुमार राय
वरिष्ठ साहित्यकार
कन्नौज, उ.प्र.
धरे सरीर शान्त रस जैसे -----

चंद्रचूड़ दिगम्बर या वाघम्बर
 व्योमशायी, विराट अघोरी
 जिसके लिए घोर कुछ भी नहीं,
 उन अर्थों में वामपंथी नहीं ।
 कश्मीरी शैवागम की उपत्यका में
 लेटी हैं शताब्दियाँ ।
 जिसके गले में झूलता काल-व्याल
 मृत्यु का नियामक-मृत्युंजय,
 उस दीर्घायु दूल्हे को कहाँ देख पायीं
 पार्वती के विवाह से इंकार करने वाली मैना,
 कहाँ देख पायीं
 कि जो साँप, बिच्छुओं से इतना प्रेम करता है
 वह मेरी तनया से कितना प्रेम करेगा
 जो समस्त भूतों से प्रेम करता है,
 इस सर्पदंश से शैलजा ने ही मुक्त किया था उन्हें ।
 मधुप-माल से नहीं,
 शैवाल से घिरे शतदल की रम्यता

कोई कालिदास ही देख सकता है ।
 जटाओं से अलंकृत तपोनिरता
 पार्वती के अक्षर-सौंदर्य को
 महादेव ही देख सकते हैं,
 देख सकते हैं पारदर्शी रूप के पीछे छिपे अरूप को ।
 गोद में गिरजा और सिर पर गंगा को चढ़ाए हुए
 देहबोध से अस्पर्शित
 सहस सतासी संवत्सर तक
 निर्बाध निर्विकल्प समाधि में आत्मलीन
 जिसके सर्प की एक फुंकार से
 काँप उठती हैं सदियाँ ,
 जो अंतरिक्ष की खिड़की से आज भी देख रहा है
 हमारी पृथ्वी को, कैलाश को,
 रावण के एक लाख पूत और सवा लाख नातियों को,
 जो एक ही साथ राम और रावण दोनों का आराध्य है ।



डा.स्नेह सुधा
कवयित्री एवं साहित्यकार
प्रवक्ता, के.पी.ग.कालेज, प्रयागराज

तप्त धरा की देह से,
 बारिश का अभिसार ।
 फुल्लित हो वह कर रही,
 नित हरियर श्रृंगार।
 कहां ग्रीष्म की गर्म तपन,
 स्वेद भरा तन आर्द्र।
 अब सावन में मन मग्न,
 नृत्य कर रहे मोर।
 गीत मग्न हो गा रहे,
 कोकिल पपिहा तान।
 पावस आते प्रफुल्ल है,
 अतिशय सभी किसान।
 बादल धरती से कहे,
 सिंचित कर लो नीर।
 ग्रीष्मकाल में क्यों रहे,
 जलाभाव की पीर।
 बारिश के जल से किया,
 जिसने भी स्नान।
 देह चमक कर हो गयी,
 देखो स्वर्ण समान।

वर्षा से हर्षित हुए,
 सब रीते खलिहान।
 खेत मग्न होने लगे,
 फसलें हुई जवान।
 शिवजी को अति प्रिय हुआ,
 अद्भुत श्रावण मास।
 कथा बांचती सी प्रकृति,
 इन्द्र धनुषी आकाश।
 बूंद बूंद घट से गिरे,
 शिव का जलाभिषेक।
 श्वेत पुष्प, और बिल्वपत्र,
 जटा, जनेऊ, भूत।
 नर नारी सब कर रहे,
 मंगल- मोक्ष हित योग ॥।
 प्रकृति नटी नटराज की,
 देती है उपहार।
 शस्य-श्यामला धरा,
 प्रतिपल करती परोपकार।





डॉ. बी एल सैनी
श्रीमाधोपुर सीकर, राजस्थान

शिवोहम् शिवोहम्

शिवोहम् शिवोहम् की गूंज सुनाता
कालजयी का गीत पुराना
विषपान कर अमृत बरसाया
नीलकंठ का रूप सुहाना

त्रिशूल लिए तांडव रचाए
भस्म रमाए ध्यान लगाए
गंगा जटाओं में मुस्काई
शिव की माया सबसे न्यारी

कभी हिमालय, कभी श्मशान
कभी समाधि, कभी संधान
जटिल नहीं है शिव का स्वरूप
सत्य, सरल, सदा अडिग रूप

भोलेनाथ हैं भाव के भूखे
श्रद्धा से जो चरणों में झुके
उन पर कृपा सदा बरसाते
शिवस्वरूप ही मोक्ष दिलाते

शिवोहम् शिवोहम् मंत्र पुकारे
भीतर चेतना दीप हमारे
शिव है शक्ति, शिव है ध्येय
शिव है सृष्टि का अंतिम क्षेय



डॉ. शशिकला अवस्थी

इंदौर, मध्य प्रदेश

जय हो भोले शंकर भंडारी

जय हो जय हो शिव शंकर त्रिपुरारी।
जय हो जय हो शिव शंकर निरंकारी।
जय हो जय हो जटाशंकर -गंगाधर प्रलयकारी ।
महाकालेश्वर- ओंकारेश्वर- सोमेनाथ-
केदारनाथ - बैद्यनाथ की महिमा न्यारी।
काशी विश्वनाथ - मल्लिकार्जुन- भीमाशंकर-
रामेश्वरम प्रभु की छवि प्यारी।
प्रत्येक हिंदू हृदय में बसे, है छवि प्यारी और न्यारी।
सावन माह में सोमवार को पूजे दुनिया सारी।
उमाशंकर- गिरिजा शंकर- भोले शंकर
महादेव भंडारी ।
औघढ़दानी -आशुतोष तुम पर, मैं जाऊं बलिहारी।
बेल पत्र -पुष्प चढ़ा ,
जल अभिषेक करें भक्तों की लीला मनुहारी।
धूरा ,आकड़ा फूल ,मिष्ठान चढ़ावे,
होवे भजन कीर्तन जयकारी।
कावड़िये पदयात्रा कर जल अभिषेक करें,
हरिद्वार में भीड़ भारी।
शिव मंदिर, नदी धाट पर भोले को मनाने की,
भक्तों की पूरी तैयारी ।
जय हो जय हो महादेव शिव शंकर भोले भंडारी।

नव वर्ष उम्मीदों का इक नया पैगाम

अब एक नया साल फिर है आया,
वादों का वही पुलिंदा फिर है लाया।

छूटे वादे जिन्हें इस साल नहीं था निभाया,
उन्हें पूरा करने का इक मौका फिर है आया।

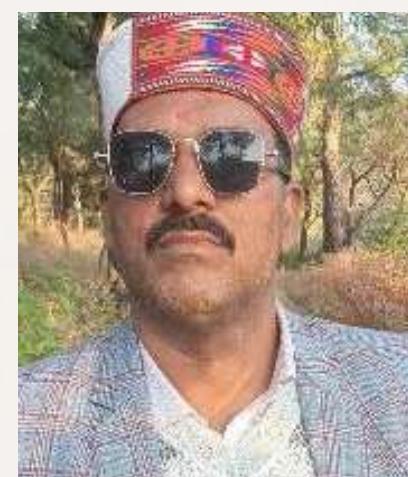
नई उमंग नई ऊर्जा नया अहसास है लाया,
नया साल नई ताजगी संकल्पों संग है आया।

देखो फिर आलस में आकर न करना जाया,
मुश्किल से ये मौका दोबारा सबके हाथ है आया।

गिले शिकवे मिटा क्या हमने सबको गले लगाया,
जिन्हें हमने वक्त बेवक्त वजह बेवजह ही सताया।

इस बरस हमने जीवन में क्या खोया क्या पाया,
हर बशर हो सुखी जग में दूर रहे गमों का साया।

आओ मिलकर करें स्वागत इस नववर्ष का,
ये नववर्ष उम्मीदों का इक नया पैगाम है लाया।



राज कुमार कौंडल
जिला बिलासपुर हिंदूप्र०



संगीता वर्मा

कानपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे शिव आएंगे

मेरे शिव जी आएंगे
मेरे शिव शक्ति के वार आ गये।

मेरे शिव पालनहारी है
वो भोले भंडारी है।

शिव ही रचनाकार है
शिव से ही ये संसार है।

शिव से ही सृष्टि मे प्रकाश है
शिव ही धरती और आकाश है।

शिव ही ब्रह्मा विष्णु महेश है
शिव का ही तीनों लोकों में वास है।

शिव ही कष्ट निकंदन है
शिव के चरणों में वंदन है।

शिव ही अन्तर्यामी है
शिव ही सबके पालनहारी है।

मेरे शिव आएंगे

आओ हम सब महा शिवरात्रि मनाएं,
शिव पूजन की थाली सजाएं ।
भगवान शिवजी को नमन करें,
उनका आशीर्वाद हम पर बना रहें।

सर पर धारण की हैं गंगा,
गलेमें नाच रहें है भुजंगा ,
माथे पर शोभित है चंदा।
कैलास पर्वत पर डाला है डेरा,
भूतों के संग करते है बसेरा।
भस्म लगा कर ,धुनी रमाएँगे,
स्मशानों मेंलगाएं फेरे ।

ऐसा है मेरा भोलेनाथ डमरूवाला,
उसने पी लिया विष का प्याला ।
बाबा भोले मेरेदीन दयालू ,
ऐसा ही है मेरा भोला भाला शंकरा।



अविनाश खरे

पुणे, महाराष्ट्र



सतीश चन्द्र श्रीवास्तव
सीतापुर, उ.प्र.

करते रुदन विलाप हैं पाठन बिन सब छंद।
लाइक और कमेंट बिन छंद जेल में बंद।।

बड़े एक से एक हैं साहित्यिक ग्रुप आज।
किंतु एडमिन भी नहीं रखते ग्रुप की लाज।।

सरकर हीं स्क्रीन पर अंगुलियों से पोस्ट।
मेंबर सारे धुत्त हैं ज्यों कब्रों में घोस्ट।।

छैल छबीली ले गई लाइक लाख बटोर।
मगर छबीले लाल की रचना हो गई बोर।।

कुछ ग्रुप चादर तान कर, गये नशे में सो।
पोस्ट आ रही, जा रही, फिर जाती है खो।।

कवि नें हृदय निकाल कर, भर रचना में प्रान।
फेसबुक पर पोस्ट की, हो गयी अंतर्धान।।

लाइक और कमेंट ही, है कविकुल की फीस।
वह भी ना दे पा रहे, सुहृद निपोरें खीस।।

तू दिन कहे तो दिन हो
तू जब चाहे तो रात हो
बहना तेरे जीवन में
खुशियों की बरसात हो
ईश्वर तेरे साथ रहे
तेरे सर पे सबका हाथ रहे
तू घर की गुड़िया है
तेरे दम से घर आबाद रहे
तु पिता जी की मान बने
भईया का सम्मान बने
तु रियासत की सुलतान बने
तेरे रोम रोम में सच्चाई हो
तेरे कर्मों में अच्छाई हो
घर आंगन सब खिल उठे
तेरी जहां जहां परछाई हो
तुझे ईश्वर अच्छी सेहत दे
सदा पिता की नेमत दे
तु रहमत है तू बरकत है
तुझे सारी दुनिया शफकत दे
मेरी बहना तू आबाद रहे
मेरी बहना तू खुशहाल रहे
न कोई तुझे मलाल रहे
तु सबकी देखभाल रहे
तुझे जन्म दिन मुबारक हो
ये अच्छा दिन मुबारक हो

मो. मज़हर
आज़मगढ़, उ.प्र.



दाक्षायणी से दक्षिणामूर्ति प्रिया

अनुपम, अलौकिक एवं अद्भुत प्रणय गाथा

डॉ. डी. डी. गोयल कृत दाक्षायणी से दक्षिणामूर्ति प्रिया शिव-सती-पार्वती की अलौकिक प्रेमगाथा का भावसमृद्ध, सरस और साहित्यिक पुनर्पाठ है, जो श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड) के शिव-सती प्रसंग को केंद्र में रखकर 18 सुव्यवस्थित अध्यायों में विस्तृत है। मूल कथा-तंतु गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित श्रीरामचरितमानस से अक्षरशः ग्रहण किया गया है, किन्तु लेखक ने इसके भावार्थ, भावरस विस्तार और मौलिक विवेचन द्वारा इसे सहृदय पाठक के लिए अत्यंत सहज, सुगम और रससिक्त रूप में प्रस्तुत किया है।

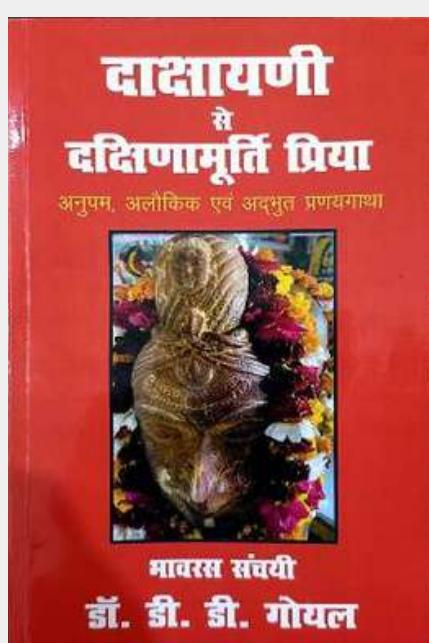
पुस्तक का आरंभ मंगलाचरण से होता है और क्रमशः शिव-सती का कुंभज ऋषि के पास जाना, सती के अंतर्मन में उठते संशय, श्रीराम की परीक्षा, शिवजी द्वारा सती का परित्याग, सती का पश्चाताप, पितृगृह गमन, योगाग्नि समर्पण, पार्वती जन्म, नारदोपदेश, कठोर तपस्या, सप्तर्षि संवाद, तारकासुर वध हेतु शिव-पार्वती विवाह की कथा और षण्मुख जन्म तक की पूरी आध्यात्मिक यात्रा को अविरल धारा की भाँति बहाया गया है। प्रत्येक अध्याय में लेखक ने मानस के दोहे, चौपाइयाँ, छंद व सोरठों को उद्धृत कर उनका भाव-साम्य और गूढ़ार्थ स्पष्ट किया है, जिससे कथा का प्रवाह अखंडित एवं रोचक बना रहता है।

डॉ. गोयल, जो पेशे से वरिष्ठ चिकित्सक हैं, ने इस कृति में चिकित्सक-मन की सूक्ष्म दृष्टि और साहित्यिक हृदय की कोमलता, दोनों का सुंदर संगम प्रस्तुत किया है। उन्होंने मानस-सागर की गहराइयों में उत्तरकर भाव-मोती चुने हैं और उन्हें सुविचारित शब्दमाला में पिरोया है।



डॉ. रमेश चन्द मीणा

कलाकार, समीक्षक एवं सौन्दर्यविद राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान उनके भावरस विस्तार में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-पुरुषार्थ चतुष्य-का संतुलित समन्वय दृष्टिगोचर होता है। कथा केवल पौराणिक पुनर्कथन नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और भक्ति-भावनाओं की गहन व्याख्या भी है। पुस्तक का कलेवर विशेष आकर्षक है। इसमें 2 रंगीन चित्र, 3 फोटोग्राफ तथा डॉ. रमेश चंद मीणा द्वारा सृजित 15 विषयानुकूल रेखाचित्र सम्मिलित हैं, जो कथा की सौंदर्याभिवृद्धि के साथ उसके भावबोध को भी सहज बनाते हैं। प्रस्तुत स्वेत-श्याम रेखाचित्र, पाठक को केवल पढ़ने ही नहीं, अपितु देखने-सुनने जैसा अनुभव भी कराते हैं। भाषा में साहित्यिक गरिमा और धार्मिक ग्रंथों की गंभीरता दोनों का संतुलन है। शैली में गद्य और पद्य का समन्वित रूप, मानस की भावभूमि के अनुरूप, एक सजीव वातावरण निर्मित करता है। व्याख्या में कहीं भी दुर्लहता या कृत्रिमता नहीं आती, जिससे सामान्य पाठक भी सहजता से कथा का आनंद ले सकता है,



जबकि विद्वान पाठक इसके गूढ़ार्थ में निहित आध्यात्मिक स्फुरण का आस्वादन कर सकता है। वर्तमान समय में, जब पौराणिक ग्रंथों का अध्ययन नई पीढ़ी में कम हो रहा है, यह पुस्तक शिव-सती-पार्वती के प्रसंग को भावात्मक, सांस्कृतिक और दार्शनिक संदर्भों सहित पुनः जीवंत करती है। यह केवल भक्ति-पाठ नहीं, बल्कि आदर्श नारी-पुरुष संबंध, त्याग, तप, निष्ठा और मोक्ष के मार्ग का भी सुंदर मार्गदर्शन है।

समग्रतः दाक्षायणी से दक्षिणामूर्ति प्रिया एक अनुपम, अलौकिक और अद्भुत प्रणय गाथा है, जो धार्मिक साहित्य, मानस-रसिकता और सांस्कृतिक चेतना में रुचि रखने वाले प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं पठनीय है। यह कृति न केवल मानस के एक प्रसंग का पुनर्लेखन है, बल्कि दाक्षायणी से पार्वती, और पार्वती से शिवप्रिया बनने की अमर कथा की- एक भाव यात्रा हैं।

कृतिका सिंह के कार्टून



कृतिका सिंह जी उभरती हुई कार्टूनिस्ट हैं, जीवन के विविध पक्षों पर आपके सीधे हस्तक्षेप करते कार्टून बहुत लोकप्रिय हैं, आप कृतिका जी को उनके फेसबुक पेज Kritika cartoonist (<https://www.facebook.com/cartoonistkritika?mibextid=ZbWKwL>) पर फॉलो भी कर सकते हैं

वीथिका ई पत्रिका :आपसे आपकी बात

वीथिका ई पत्रिका साहित्य, कला, संस्कृति और विज्ञान को समर्पित मासिक ई पत्रिका है. आप हमारे वेबसाइट www.vithika.org से पत्रिका डाउनलोड कर सकते हैं, व लेखों, रचनाओं पर हमें अपने विचार भी भेज सकते हैं. वीथिका ई पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखक के अपने विचार हैं, इनसे या इनके विचारों से पत्रिका या पत्रिका की सम्पादकीय समिति किसी प्रकार की सहमति नहीं रखती.

हमें अपनी रचना या लेख भेजने के लिए आप उसे हिंदी भाषा में टाइप कर हमें जीमेल या whatsapp कर सकते हैं :

Gmail : vithikaportal@gmail.com
 whatsapp: 8175800809